Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-2021

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY

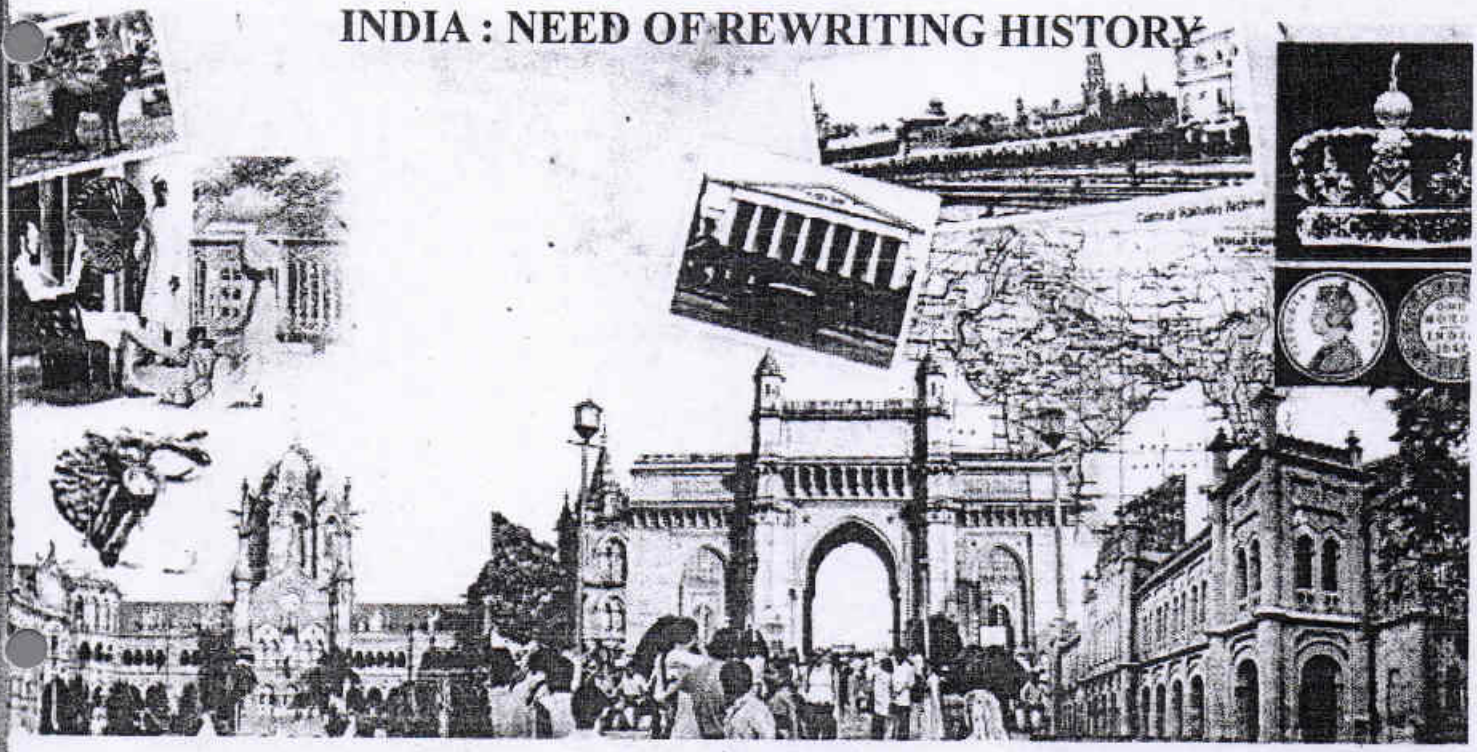

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr Santosh Bansod,
Head , Department of History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya
Badnera, Dist. Amravati.

Editor
Dr. Dheeraj Kumar Najan,
Head , Department of History
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya,
Gadegaon, Telhara Dist. Akola

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

ISSUE No- 321

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist. Parbhani

...national Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, 321 (CCCXXI)
ISSN : 2278-93
October 2021

INDEX-321

No.	Title of the Paper / Authors' Name	Page No.
1	ब्रिटिश आक्रमणाचे वऱ्हाडवरील शैक्षणिक परिणाम — प्रा.डॉ. संतोष बनसोड	1
2	ब्रिटिशराजवटीचे भारतावरील परिणाम — डॉ.उर्मिला क्षीरसागर	4
3	वॉरन हेस्टिंग्ज कालखंडात भारतात झालेल्या बदलाचा ऐतिहासिक आढावा (इ.स. १७७२ - १७८५) — डॉ. शरद गावंडे / पंढरीनाथ पोपट शेजूळ	8
4	वासुदेव बळवंत फडके यांची सशस्त्र चळवळ — डॉ श्रीहरी रंगनाथराव पितळे	11
5	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे सांस्कृतिक जीवनावरील परिणाम — प्रा. अंभोरे अशोक गंगाराम	13
6	भारतातील ब्रिटीश आक्रमणाचे आर्थिक जीवनावरील परिणाम — प्रा.सुरेखा रामदास लगड	16
7	भारतावर ब्रिटिश आक्रमणाचे राजकीय जीवनावर झालेले परिणाम एक ऐतिहासिक चितंनशील अध्ययन — प्रा.डॉ. एन. आर. वर्मा	18
8	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील क्रांतिकारी स्त्रियांचे योगदान — प्रा. डॉ. किशोर शेषराव चौरे	22
9	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे शैक्षणिक जीवनावर झालेले परिणाम — प्रा. डॉ. शरद गावंडे/प्रा. संजय सदाशिव बनकर	25
10	ब्रिटिश कालीन शिक्षण पद्धतीचे भारतीयांवरील परिणाम — डॉ. एस. यु. गावंडे/अमोल विश्वासराव तायडे	28
11	ब्रिटीश कालीन शिक्षणाचे भारतावर झालेले परिणाम — डॉ. प्रमोद ना. घ्यार	31
12	ब्रिटीश साम्राज्यवादाविरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनाची दीर्घकालीन रणनीती — सहा. प्रा. डी.एन. रिठे	37
13	गव्हर्नर जनरल लॉर्ड डलहौसीचे खालसा धोरण एक ऐतिहासिक चिकित्सा १८४८–१८५६ — श्रीकांत पांडुरंग तळेकर/डॉ.शरद गावंडे	40
14	बहिरम यात्रा — एक ऐतिहासिक मागोवा — कु. शिल्पा युगेंद्र अंबळकार	44
15	भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव... — डॉ.सोमनाथ लक्ष्मण गुंजकर	47
16	'भारतावरील ब्रिटिश आक्रमण, सामाजिक जीवन व भाषांतर युग' — डॉ.संदीप अर्जुनराव बनसोडे	53
17	ब्रिटिश आक्रमणाने स्त्री जीवनातील सतिप्रथेवर झालेले परिणाम — प्रा. डॉ. कुसमेंद्र गं. सोनटक्के	56
18	भारतावरील ब्रिटीश आक्रमणाचे स्त्री जीवनावरील परिणाम — प्रा. कु. सुषमा जयकुमार फरसोले	58

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

'Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -7.675,Issue NO, 321(CCCXXI)
ISSN : 2278-9308
October, 2021

भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव...

डॉ.सोमनाथ लक्ष्मण गुंजकर
इतिहास विभाग
श्री गुरु बुद्धिस्वामी महाविद्यालय पूर्णा (जं) ता. पूर्णा जि. परभणी (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

सिकंदर के भारत में आने से भी बहुत पहले, रोम के एक शासक ने कहा था- 'भारतीयों के बागों में गार, उनके खाने की मेज पर काली मिर्च तथा उनके बदन का रेशम, हमें पागल बना देता है। हम इन चीजों के लिये बर्बाद हुए जा रहे हैं।' यह कथन इस बात का प्रमाण है कि यूरोप तथा भारत के बीच ईसा के जन्म के सैंकड़ों साल पहले भी व्यापारिक सम्बन्ध थे तथा व्यापारिक संतुलन भारत के पक्ष में था। भारतवासी ईसा से भी कई हजार साल पहले अर्थात् सैंधव सभ्यता के समय से ही स्वर्ण धातु के गुणों तथा उसके उपयोग से परिचित थे। दक्षिण भारत में भी ईसा से लगभग 1000 साल पहले स्वर्ण उत्पादन होता था किंतु भारत में स्वर्ण बहुत ही कम मात्रा में उपलब्ध था। इस कारण भारतवासी विदेशी व्यापार में मुद्रा के रूप में केवल सोना-चांदी ही स्वीकार करते थे। यही कारण है कि भारत के मसालों, सुगंधित काष्ठों, अनाज तथा कपड़ों को प्राप्त करने के लिये विश्व भर के देशों ने भारतीय व्यापारियों के समक्ष सोने-चांदी के ढेर लगा दिये। लैण्डस्टॉन ने लिखा है– 'समुद्र में जाने के अनेक रास्ते एवं माध्यम हैं पर उद्देश्य केवल एक ही था- चमत्कारिक देश भारत पहुँचना, जो देश धन से लबालब भरा है।' शेक्सपीयर ने -'भारत भूमि को विश्व के लिये महान अवसरों की चरम सीमा कहा है'। ब्रिटिश इतिहासकारों ने लिखा है कि भारत में यूरोपीय जातियों के प्रवेश का कारण भारत के लोगों को सभ्य बनाना था। जबकि वास्तव में भारत में यूरोपीय जातियों के आगमन के दो उद्देश्य जान पड़ते हैं- भारत में व्यापार करके धन अर्जित करना तथा भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करना। इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिये यूरोपीय जातियों को भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने की आवश्यकता हुई। यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि यूरोपीय जातियाँ इस देश में व्यापारिक उद्देश्यों को लेकर प्रविष्ट हुई किंतु उन्होंने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये एक हाथ में धर्म का झण्डा और दूसरे हाथ में तलवार थाम रखी थी।पुर्तगालियों की सफलता ने अँग्रेज व्यापारियों को भारत आने के लिये उत्तेजित किया। पुर्तगालियों द्वारा यूरोप के बाजारों में भारतीय मसालों, कालीमिर्च, रेशमी कपड़ों, सूती कपड़ों तथा विभिन्न औषधियों को बेचकर कमाये जा रहे मुनाफे को देखकर ब्रिटिश वासियों के खून में उबाल आता था। वे इस लाभप्रद व्यापार में हिस्सा लेने के लिये अधीर हो उठे किंतु सोलहवीं शताब्दी के अंत तक वे पुर्तगाल तथा स्पेन की नौसैनिक शक्ति को टक्कर देने में समर्थ नहीं थे। उन्होंने पचास से भी अधिक वर्षों तक इंग्लैण्ड से भारत के बीच वैकल्पिक समुद्री मार्ग खोजने के प्रयास किये किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। इस बीच उन्होंने समुद्री शक्ति जुटा ली। 1579 ई. में ड्रेक ने समुद्र के मार्ग से विश्व की परिक्रमा की। 1588 ई. में उन्होंने स्पेनिश आर्मेडा को परास्त करके पूरब की ओर जाने का समुद्री मार्ग खोल लिया। बहुत से इतिहासकारों का मानना है कि भारत में आने के बाद लगभग 150 वर्षों तक अंग्रेज व्यापारी ही बने रहे। यह सही है कि इस काल में उन्होंने व्यापार, न कि भूमि की नीति अपनाई किंतु यह बात सही नहीं है कि इस काल में वे नितांत व्यापारी बने रहे। वास्तविकता यह है कि कम्पनी अपने व्यापार को तलवार की छाया में बढ़ा रही थी ताकि आवश्यकता होने पर वे देशी शक्तियों पर नियंत्रण स्थापित कर अपना व्यापार निरापद रूप से चला सकें। 1619 ई. में सर टॉमस रो ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सलाह दी थी कि आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इन लोगों के साथ सबसे

Co-ordinator IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Dist.Parbhani

अच्छा व्यवहार तभी किया जा सकता है जब एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में संवादवाहक की छड़ी हो।(1)

1. औद्योगिक क्रांति का प्रभाव

18 वीं शताब्दी के आसपास दुनिया में कई महत्वपूर्ण घटनाएं हुईं। ऐसी ही एक घटना औद्योगिक क्रांति थी जो इंग्लैंड में हुई थी। यह धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों में भी फैल गया। आपने इंग्लैंड में होने वाली औद्योगिक क्रांति के बारे में पढ़ा होगा, और नए समुद्र और व्यापार मार्गों की खोज के बारे में भी पढ़ा होगा। भारत में ऐसा ही एक समुद्री मार्ग 1498 में वास्को डी गामा नामक एक पुर्तगाली ने खोजा था। परिणामस्वरूप, अंग्रेजी, फ्रेंच, पुर्तगाली और डच व्यापार के लिए भारत आए। उन्होंने इसका उपयोग भारत में मिशनरी गतिविधियों को फैलाने के लिए भी किया। क्या आप जानते हैं कि भारतीय इतिहास में आधुनिक काल की शुरुआत इन यूरोपीय शक्तियों के भारत आने से हुई? भारत में ब्रिटिशों के आने के बाद आर्थिक नीती मे बडे बदलावं लाये। यूरोपीय और ब्रिटिश व्यापारी शुरू में व्यापारिक उद्देश्यों के लिए भारत आए। ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के कारण वहाँ के कारखानों के लिए कच्चे माल की माँग बढ़ गई। साथ ही, उन्हें अपने तैयार माल को बेचने के लिए एक बाजार की भी आवश्यकता थी। भारत ने उनकी सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए ब्रिटेन को ऐसा मंच प्रदान किया। 18 वीं शताब्दी भारत में आंतरिक शक्ति संघर्ष की अवधि थी और मुगल साम्राज्य की गिरती शक्ति के साथ, ब्रिटिश अधिकारियों को भारतीय क्षेत्र पर अपनी पकड़ स्थापित करने या मजबूत करणे का सही अवसर देख रहे थे। उन्होंने कई युद्धों, मजबूर संधियों, पूरे देश में विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों के साथ गठजोड़ और गठबंधन के माध्यम से ऐसा किया। उनकी नई प्रशासनिक और आर्थिक नीतियों ने उन्हें देश पर अपना नियंत्रण मजबूत करने में मदद की। उनकी भूमि राजस्व नीतियां उन्हें गरीब किसानों को रखने में मदद करती हैं और बदले में राजस्व के रूप में बड़ी रकम प्राप्त करती हैं। उन्होंने विभिन्न नकदी फसलों और ब्रिटेन में उद्योगों के लिए कच्चे माल के बढ़ने के साथ कृषि के व्यावसायीकरण को मजबूर किया। मजबूत राजनीतिक नियंत्रण के साथ, ब्रिटिश भारत के साथ व्यापार पर एकाधिकार करने में सक्षम थे। उन्होंने अपने विदेशी प्रतिद्वंद्वियों को व्यापार में हरा दिया ताकि कोई प्रतिस्पर्धा न हो। उन्होंने सभी प्रकार के कच्चे माल की बिक्री पर एकाधिकार कर लिया और उन्हें कम कीमतों पर खरीद लिया जबकि भारतीय बुनकरों को उन्हें अत्यधिक कीमतों पर खरीदना पड़ा।ब्रिटेन में प्रवेश करने वाले भारतीय सामानों पर भारी शुल्क लगाए गए ताकि वे अपने स्वयं के उद्योग की रक्षा कर सकें। खेतों से बंदरगाह तक कच्चे माल के आसान हस्तांतरण और बंदरगाहों से बाजारों तक तैयार माल के परिवहन में सुधार के लिए विभिन्न निवेश किए गए थे। इसके अलावा, अंग्रेजी शिक्षा को शिक्षित भारतीयों का एक वर्ग बनाने के लिए पेश किया गया था जो देश पर शासन करने और अपने राजनीतिक अधिकार को मजबूत करने में अंग्रेजों की सहायता करेंगे। इन सभी उपायों ने अंग्रेजों को भारत पर अपना शासन स्थापित करने, मजबूत करने और उसे जारी रखने में मदद की।(2)

2. ब्रिटिश शासन की भू -राजस्व नीती

अंग्रेजों की भारत विजय के बाद पुरानी व्यवस्था में बहुत परिवर्तन का सिलसिला शुरू किया। नई लगान व्यवस्था ने गाँव की जमीन पर लोगों की जमाने से चली आ रही मिल्कियत खत्म कर उसकी जगह भूस्वामित्व के इन रूपों को जन्म दिया - इजारेदारी प्रथा स्थायी बन्दोबस्त या जमींदारी प्रथा ,महालवाड़ी व्यवस्था ' एवं रैय्यतवाड़ी व्यवस्था। लगान व्यवस्था के अंतर्गत 1790 ई . में लॉर्ड कॉर्नवॉलिस ने दसवर्षीय व्यवस्था को लागू किया था। यह व्यवस्था 1793 ई . में बंगाल ,बिहार और उड़ीसा में स्थाई रूप से लागू कर दी गई। ब्रिटिश भारत की 19 प्रतिशत भूमि पर यह व्यवस्था निश्चित कर दी गई थी। इसके बाद महालवाड़ी व्यवस्था का प्रस्ताव सर्वप्रथम 1819 ई .में हॉल्ट मैकेंजी द्वारा लाया गया। सबसे पहले यह व्यवस्था उत्तर प्रदेश ,मध्य प्रदेश एवं पंजाब में लागू की गई थी। इसके अंतर्गत भूमि का लगभग 30 प्रतिशत भाग शामिल था। 1792 ई .में

IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
Estd.1983
PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani

रैय्यतवाड़ी व्यवस्था ' मद्रास के बारामहल में पहली बार लागू की गई। मद्रास में यह व्यवस्था 30 वर्षों तक लागू रही। 1835 ई. में भू -सर्वेक्षण के आधार पर इसे बम्बई में भी लागू कर दिया गया । (3)

3. भारतीय अर्थव्यवस्था मे बदलावं

अंग्रेजी व्यापारियों को बहुत अधिक पूंजी जमा करने में मदद की है। वे अब इस धन को भारत के साथ उद्योग और व्यापार स्थापित करने में लगाना चाहते थे। मशीनों के माध्यम से माल का बड़े पैमाने पर उत्पादन जो आज हम देखते हैं, औद्योगिक क्रांति के माध्यम से अग्रणी था, जो 18 वीं शताब्दी के अंत में और 19 वीं सदी की शुरुआत में इंग्लैंड में हुआ था। इससे तैयार उत्पादों के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने औद्योगिक आधार के वित्तपोषण और विस्तार में मदद की। इस समय के दौरान इंग्लैंड में निर्माताओं का एक वर्ग था जो व्यापार की तुलना में विनिर्माण से अधिक लाभान्वित हुआ। वे भारत से अधिक कच्चे माल के साथ-साथ अपने तैयार माल को वापस भेजने में रुचि रखते थे।प्राचीन काल से, लोगों के लिए आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि था। इसलिए, भूमि कर ने दुनिया भर के सभी सम्राटों के लिए राजस्व का एक प्रमुख स्रोत बनाया था। 18 वीं शताब्दी में, भारतीय लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। ब्रिटिश शासन के दौरान, भूमि से राजस्व बढ़ता रहा और इसके कारण कई थे। इससे पहले अंग्रेज भारत के साथ व्यापार करने आए थे। धीरे-धीरे वे भारत के विशाल क्षेत्र को जीतना चाहते थे जिसके लिए उन्हें बहुत अधिक धन की आवश्यकता थी।उन्हें व्यापार, कंपनी की परियोजनाओं के साथ-साथ प्रशासन चलाने की लागत के लिए भी धन की आवश्यकता थी। अंग्रेजों ने कई भूमि राजस्व प्रयोगों को अंजाम दिया जिससे काश्तकारों को कठिनाई हुई। उन्होंने अपनी नीतियों और युद्ध के प्रयासों को वित्त देने के लिए किसानों से कर निकाले। अंग्रेजों के लिए राजस्व के इस संग्रह को लाने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष साधनों को चलाया गया। इसने उन लोगों के जीवन को प्रभावित किया जो अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते थे क्योंकि उन्हें उपज में जमींदारों और कलेक्टरों को अपना हिस्सा प्रदान करना था। स्थानीय प्रशासन ग्रामीण गरीबों को राहत और प्राकृतिक न्याय देने में विफल रहा। लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 में बंगाल और बिहार में स्थायी निपटान की शुरुआत की। इसने जमींदार या जमींदार को राज्य के खजाने में एक निश्चित राशि जमा कराई। बदले में उन्हें भूमि के वंशानुगत मालिकों के रूप में मान्यता दी गई थी। इसने जमींदार को जमीन का मालिक बना दिया। 1822 में, अंग्रेजों ने उत्तर पश्चिमी प्रांतों, पंजाब, गंगा घाटी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में महालवरी बंदोबस्त की शुरुआत की। यहां मूल्यांकन का आधार एक महल या संपत्ति का उत्पाद था, जो एक गांव या गांवों का समूह हो सकता है। यहां सरकार द्वारा मूल्यांकन किए गए राजस्व की राशि का भुगतान करने के लिए महल के सभी मालिक संयुक्त रूप से जिम्मेदार थे। दुर्भाग्य से इससे किसानों को कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि ब्रिटिश की माँग बहुत अधिक थी।(4) अंग्रेजों द्वारा अपनाई जाने वाली आर्थिक नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था का औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन किया, जिसकी प्रकृति और संरचना ब्रिटिश अर्थव्यवस्था की जरूरतों के अनुसार निर्धारित की गई थी। इस संबंध में भारत की ब्रिटिश विजय पिछले सभी विदेशी विजय से भिन्न थी।पिछले विजेताओं ने भारतीय राजनीतिक शक्तियों को उखाड़ फेंका था, लेकिन देश की आर्थिक संरचना में कोई बुनियादी बदलाव नहीं किया था; वे धीरे-धीरे भारतीय जीवन का हिस्सा बन गए थे, राजनीतिक और साथ ही आर्थिक किसान, कारीगर और व्यापारी पहले की तरह ही अस्तित्व का नेतृत्व करते रहे।आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मूल आर्थिक प्रतिमान नष्ट हो चुका था। शासकों के परिवर्तन का अर्थ केवल उन लोगों के कार्मिकों में परिवर्तन था जिन्होंने किसानों के अधिशेष को विनियोजित किया था। लेकिन ब्रिटिश विजेता पूरी तरह से अलग थे। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था की पारंपरिक संरचना को पूरी तरह से बाधित कर दिया। इसके अलावा, वे कभी भी भारतीय जीवन का अभिन्न अंग नहीं बने। वे हमेशा भूमि में विदेशी बने रहे, भारतीय संसाधनों का दोहन किया और भारत की संपत्ति को लुटते गये । ब्रिटिश व्यापार और उद्योग के हितों के लिए

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna, Dist. Parbhani
PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist Parbhani

भारतीय अर्थव्यवस्था के इस अधीनता के परिणाम कई और विविध थे।शहरी हस्तशिल्प उद्योग का अचानक और त्वरित पतन हुआ जिसने सदियों तक भारत का नाम पूरी सभ्य दुनिया के बाजारों में एक साथ रखा। यह पतन ब्रिटेन से सस्ती आयातित मशीन से निर्मित सामानों के साथ प्रतिस्पर्धा के कारण हुआ। हम जानते हैं कि अंग्रेजों ने 1813 के बाद भारत पर एक तरह से मुक्त व्यापार की नीति लागू की और ब्रिटिश सूदखोरों के आक्रमण, विशेष रूप से सूती वस्त्रों का तुरंत पालन किया। आदिम तकनीकों से बना भारतीय सामान शक्तिशाली भाप से संचालित मशीनों द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता था। रेलवे बनने के बाद भारतीय उद्योगों, विशेषकर ग्रामीण कारीगरों के उद्योगों की बर्बादी और भी तेजी से बढ़ी। रेलवे ने ब्रिटिश मैन्युफैक्चरर्स को देश के दूरस्थ गांवों में पारंपरिक उद्योगों तक पहुंचने और उखाड़ने में सक्षम बनाया। अमेरिकी लेखक के रूप में, डीएच बुकानन ने इसे रखा है, "अलग-थलग आत्मनिर्भर गाँव का कवच स्टील रेल द्वारा छेदा गया था, और उसके जीवन का रक्त बह गया।"कपास की बुनाई और कताई उद्योगों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। रेशम और ऊनी वस्त्रों का कोई बेहतर प्रदर्शन नहीं हुआ और एक समान भाग्य ने लोहे, मिट्टी के बर्तनों, कांच, कागज, धातुओं, बंदूकों, शिपिंग, तेल-दबाव, टैनिंग और रंगाई उद्योगों को पीछे छोड़ दिया। विदेशी वस्तुओं की आमद के अलावा, ब्रिटिश विजय से उत्पन्न कुछ अन्य कारकों ने भी भारतीय उद्योगों को बर्बाद करने में योगदान दिया। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी और उसके नौकरों द्वारा बंगाल के कारीगरों पर किए गए अत्याचार ने उन्हें बाजार मूल्य से नीचे अपना माल बेचने और प्रचलित मजदूरी के नीचे अपनी सेवाएं देने के लिए मजबूर किया, बड़ी संख्या में मजबूर किया। उन्हें अपने पैतृक व्यवसायों को छोड़ने के लिए। सामान्य तौर पर, भारतीय हस्तशिल्प को कंपनी द्वारा उनके निर्यात को दिए गए प्रोत्साहन से लाभ हुआ होगा, लेकिन इस उत्पीड़न का विपरीत प्रभाव पड़ा। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन और यूरोप में भारतीय वस्तुओं के आयात पर लगाए गए उच्च आयात कर्तव्यों और अन्य प्रतिबंधों ने 1820 के बाद ब्रिटेन में भारतीय निर्माताओं को यूरोपीय बाजारों के आभासी समापन के लिए प्रेरित किया। भारतीय शासकों और उनके न्यायालयों का क्रमिक रूप से गायब होना, जो उत्पादित हस्तशिल्प के मुख्य ग्राहक थे, ने भी इन उद्योगों को एक बड़ा झटका दिया। "उदाहरण के लिए, भारतीय राज्य पूरी तरह से सैन्य हथियारों के उत्पादन में अंग्रेजों पर निर्भर थे।" ब्रिटिशों ने अपने सभी सैन्य और अन्य सरकारी स्टोर ब्रिटेन में खरीदे। इसके अलावा, भारतीय शासकों और रईसों को ब्रिटिश अधिकारियों और सैन्य अधिकारियों द्वारा शासक वर्ग के रूप में प्रतिस्थापित किया गया था जिन्होंने अपने स्वयं के घरेलू उत्पादों को लगभग विशेष रूप से संरक्षण दिया था। इससे हस्तशिल्प की लागत में वृद्धि हुई और विदेशी वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा करने की उनकी क्षमता कम हो गई।भारतीय हस्तशिल्पों की बर्बादी कस्बों और शहरों के खंडहर में परिलक्षित हुई जो उनके निर्माण के लिए प्रसिद्ध थे। युद्ध और लूटपाट की घटनाओं को झेलने वाले शहर ब्रिटिश विजय से बचने में विफल रहे। ढाका, सूरत, मुर्शिदाबाद और कई अन्य आबादी वाले और फलते-फूलते औद्योगिक केंद्रों को बंद कर दिया गया और कचरे को रख दिया गया। उन्नीसवीं सदी के अंत तक, शहरी आबादी कुल आबादी का मुश्किल से 10 प्रतिशत थी।

4. भारत का आर्थिक पिछड़ापन

भारत का आर्थिक पिछड़ापन और गरीबी प्रकृति की उदासीनता के कारण नहीं थे। वे मानव निर्मित थे। भारत के प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में थे और पैदावार देने में सक्षम थे, अगर इनका समुचित उपयोग किया जाए तो लोगों को समृद्धि का एक उच्च स्तर मिलता है। लेकिन, विदेशी शासन और शोषण के परिणामस्वरूप, और एक पिछड़े कृषि और औद्योगिक आर्थिक ढांचे के रूप में - वास्तव में इसके ऐतिहासिक और सामाजिक विकास के कुल परिणाम के रूप में - भारत ने एक अमीर देश में रहने वाले गरीब लोगों के विरोधाभास को प्रस्तुत किया। भारत की गरीबी उसके भूगोल या प्राकृतिक संसाधनों की कमी या लोगों के चरित्र और क्षमताओं में कुछ 'अंतर्निहित' दोष का

Co-ordinator IQAC Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
PRINCIPAL Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

नहीं था। न ही यह मुगल काल या पूर्व-ब्रिटिश भारत का उत्पाद था। यह मुख्य रूप से पिछली दो शताब्दियों के इतिहास का एक उत्पाद था। इससे पहले, भारत पश्चिमी यूरोप के देशों से अधिक पिछड़ा नहीं था। न ही दुनिया के देशों के बीच उस समय जीवन स्तर के मानकों में अंतर था। ठीक उसी अवधि के दौरान जब पश्चिम के देश विकसित और समृद्ध हुए, भारत आधुनिक उपनिवेशवाद के अधीन था और उसे विकसित होने से रोका गया था।आज के सभी विकसित देश लगभग पूरी तरह से उस अवधि में विकसित हुए जिस अवधि में भारत पर ब्रिटेन का शासन था, उनमें से अधिकांश 1850 के बाद ऐसा कर रहे थे। 1750 तक दुनिया के विभिन्न हिस्सों के बीच जीवन स्तर में अंतर व्यापक नहीं था। यह दिलचस्प है कि इस संबंध में, ध्यान दें कि ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत और बंगाल की ब्रिटिश विजय की तारीखें लगभग मेल खाती हैं! मूल तथ्य यह है कि ब्रिटेन में औद्योगिक विकास और सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति का उत्पादन करने वाली समान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं ने भी भारत में आर्थिक अविकसितता और सामाजिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन का उत्पादन किया।इसका कारण स्पष्ट है। ब्रिटेन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अपनी अर्थव्यवस्था के अधीन कर लिया और अपनी जरूरतों के अनुसार भारत में बुनियादी सामाजिक प्रवृत्तियों का निर्धारण किया। इसका परिणाम भारत के कृषि और उद्योगों, जमींदारों, जमींदारों, राजकुमारों, साहूकारों, व्यापारियों, पूंजीपतियों और विदेशी सरकार और उसके अधिकारियों द्वारा शोषण और गरीबी, बीमारी और अर्ध-भुखमरी के प्रसार से था।(5)

6. बदलती आर्थिक नितिया कारीगरों की बर्बादी:

अंग्रेजों द्वारा अपनाई जाने वाली आर्थिक नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था का औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन किया, जिसकी प्रकृति और संरचना ब्रिटिश अर्थव्यवस्था की जरूरतों के अनुसार निर्धारित की गई थी। इस संबंध में भारत की ब्रिटिश विजय पिछले सभी विदेशी विजय से भिन्न थी पिछले विजेताओं ने भारतीय राजनीतिक शक्तियों को उखाड़ फेंका था, लेकिन देश की आर्थिक संरचना में कोई बुनियादी बदलाव नहीं किया था; वे धीरे-धीरे भारतीय जीवन का हिस्सा बन गए थे, राजनीतिक और साथ ही आर्थिक। किसान, कारीगर और व्यापारी पहले की तरह ही अस्तित्व का नेतृत्व करते रहे। आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मूल आर्थिक प्रतिमान नष्ट हो चुका था। शासकों के परिवर्तन का अर्थ केवल उन लोगों के कार्मिकों में परिवर्तन था जिन्होंने किसानों के अधिशेष को विनियोजित किया था। लेकिन ब्रिटिश विजेता पूरी तरह से अलग थे। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था की पारंपरिक संरचना को पूरी तरह से बाधित कर दिया।इसके अलावा, वे कभी भी भारतीय जीवन का अभिन्न अंग नहीं बने। वे हमेशा भूमि में विदेशी बने रहे, भारतीय संसाधनों का दोहन किया और भारत की संपत्ति को श्रद्धांजलि के रूप में ले गए। ब्रिटिश व्यापार और उद्योग के हितों के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था के इस अधीनता के परिणाम कई और विविध थे।शहरी हस्तशिल्प उद्योग का अचानक और त्वरित पतन हुआ जिसने सदियों तक भारत का नाम पूरी सभ्य दुनिया के बाजारों में एक साथ रखा। यह पतन ब्रिटेन से सस्ती आयातित मशीन से निर्मित सामानों के साथ प्रतिस्पर्धा के कारण हुआ।हम जानते हैं कि अंग्रेजों ने 1813 के बाद भारत पर एक तरह से मुक्त व्यापार की नीति लागू की और ब्रिटिश सूदखोरों के आक्रमण, विशेष रूप से सूती वस्त्रों का तुरंत पालन किया। आदिम तकनीकों से बना भारतीय सामान शक्तिशाली भाप से संचालित मशीनों द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता था।

रेलवे बनने के बाद भारतीय उद्योगों, विशेषकर ग्रामीण कारीगरों के उद्योगों की बर्बादी और भी तेजी से बढ़ी। रेलवे ने ब्रिटिश मैन्युफैक्चरर्स को देश के दूरस्थ गांवों में पारंपरिक उद्योगों तक पहुंचने और उखाड़ने में सक्षम बनाया। अमेरिकी लेखक के रूप में, डीएच बुकानन ने इसे रखा है, "अलग-थलग आत्मनिर्भर गाँव का कवच स्टील रेल द्वारा छेदा गया था, और उसके जीवन का रक्त बह गया।"कपास की बुनाई और कताई उद्योगों को सबसे ज्यादा

Co-ordinator IQAC Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Mandal's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn) Dist. Parbhani Estd. 1983
PRINCIPAL Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn) Dist. Parbhani

नुकसान हुआ। रेशम और ऊनी वस्त्रों का कोई बेहतर प्रदर्शन नहीं हुआ और एक समान भाग्य ने लोहे, मिट्टी के बर्तनों, कांच, कागज, धातुओं, बंदूकों, शिपिंग, तेल-दबाव, टैनिंग और रंगाई उद्योगों को इसके अलावा, ब्रिटिश शासन ने गांवों में आर्थिक जीवन के संतुलन को भी बिगाड़ दिया। ग्रामीण शिल्प के क्रमिक विनाश ने ग्रामीण इलाकों में कृषि और घरेलू उद्योग के बीच के संबंध को तोड़ दिया और इस तरह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नष्ट करने में योगदान दिया।कृषि पर यह बढ़ता दबाव ब्रिटिश शासन के तहत भारत में अत्यधिक गरीबी का एक प्रमुख कारण था।मूल तथ्य यह है कि ब्रिटेन में औद्योगिक विकास और सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति का उत्पादन करने वाली समान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं ने भी भारत में आर्थिक अविकसितता और सामाजिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन का उत्पादन किया। इसका कारण स्पष्ट है। ब्रिटेन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अपनी अर्थव्यवस्था के अधीन कर लिया और अपनी जरूरतों के अनुसार भारत में बुनियादी सामाजिक प्रवृत्तियों का निर्धारण किया।(6)

निष्कर्ष

भारत पर पहली बारअब एक पूंजीवादी राष्ट्र का शासन था और इसका भारत की आर्थिक संरचना पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। भारत पर अंग्रेजों के राजनीतिक प्रभुत्व के विस्तार की दिशा में उठाया गया हर कदम पुरानी अर्थव्यवस्था के विघटन और नए आर्थिक रूपों के उन्नयन की दिशा में ही अलग कदम था। यहां अंग्रेजों का प्रमुख उद्देश्य अधिकतम लाभ अर्जित करना था।नई भूमि व्यवस्थाने गाँव के सामुदायिक जन - जीवन और उसकी स्वपर्याप्ता को बेतरह झकझोर दिया। यह कृषक समुदाय की ऋणग्रस्तता और गरीबी का मुख्य कारण सिद्ध हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता मोहनलाल ,भारत में यूरोपीय जातियों का आगमन,मे 22, 2020.
2. सिंह विकास, ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज पर प्रभाव, द इंडियन वायर,6,अगस्त,2020.
3. मोनू, आय पब्लिसर,भारत में अंग्रेजों की भू-राजस्व नीतियां अध्ययन
4. सिंह विकास, ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं समाज पर प्रभाव, द इंडियन वायर, 6,अगस्त,2020.
5. रॉय मोनिका,इतिहास चर्चा,भारत में ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव।
6. राय अमिता, इतिहास चर्चा,भारत में ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव।

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

NARAYANRAO RANA MAHAVIDYALAYA
BADNERA, AMRAVATI &

DR. GOPALRAO KHEDKAR MAHAVIDYALAYA GADEGAON
TELHARA, DIST. AKOLA (M.S.) INDIA

CONSEQUENCES OF BRITISH INVASION OF INDIA : NEED OF REWRITING HISTORY

14th OCTOBER 2021

Jointly Organized by Departments of History

Dr. Ashish Mahore
President
Shri Gorakshan Mahavidyalaya Shikshan Sanstha, Amravati

Adv. Harshwardhanji Deshmukh
Hon. President
Shri Shivaji Education Society, Amravati

Shri. Dolendraji Patil
Treasurer
Shri Gorakshan Mahavidyalaya Shikshan Sanstha, Amravati

Adv. Gajananrao Pundkar
Vice President
Shri Shivaji Education Society, Amravati

Organizing Committee

Dr. Gopal Vairale
Principal
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati

Dr. Gopal J. Dhole
Principal
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya, Gadegaon, Telhara, Dist. Akola

Dr. Santosh Bansod
Convener
Associate Professor & HOD History
Narayanrao Rana Mahavidyalaya, Badnera, Dist. Amravati

Dr. Dhirajkumar Najan
Convener
Asst. Professor & HOD History
Dr. Gopalrao Khedkar Maha. Gadegaon, Telhara, Dist. Akola

1) **Prof. Dr. Kalpana Mehare**, Narayanrao Rana Maha. Badnera
2) **Prof. Satish Khode**, Narayanrao Rana Maha. Badnera
3) **Prof. Dr. Harshal Nimbhorkar**, Narayanrao Rana Maha. Badnera
4) **Dr. Krushna Mahure**, Dr. Gopalrao Khedkar Maha. Gadegaon, Telhara
5) **Prof. M. M. Kawarke**, Dr. Gopalrao Khedkar Maha. Gadegaon, Telhara
6) **Dr. G. O. Joudhalekar**, Dr. Gopalrao Khedkar Maha. Gadegaon, Telhara

Organizing Committee Member

1) Prof. Dr. O. B. Munde
2) Prof. Dr. S. G. Bhangdiya
3) Prof. Dr. Sachin Hole
4) Prof. S. J. Farsole
5) Dr. R. S. Sadaks
6) Prof. Dr. K. J. Maspute
7) Prof. Dr. A. C. Pande
8) Prof. R. V. Lonkar
9) Prof. M. P. Chopade

1) **Kirandeep Kaur**, [illegible]
2) **Arvind Kumar**, [illegible] Religions & Philosophy, U.K.
3) **Dr. Gautam Chatarjee**, London
4) **Dr. Sohanlal Sampla**, Germany, Ambedkarite International [illegible]

National Advisory Committee

1) **Prof. Dr. Sushim Pagare**, Ujjain
2) **Dr. Ajitkumar**, Delhi
3) **Prof. Dr. Sanjay Swarnkar**, [illegible]
4) **Prof. Dr. Indira Suryvanshi**, Hyderabad
5) **Prof. Dr. Priti Khandare**, Sagar (M.P.)

State Advisory Committee

1) **Prof. Dr. Venkatesh Lamb**, [illegible] BOS, SRTMU
2) **Prof. Dr. Sadashiva Dande**, [illegible] BOS, [illegible]
3) **Prof. Dr. Shyam Koreti**, [illegible] BOS, [illegible] Nagpur
4) **Prof. Dr. Kisan Ambade**, [illegible] BOS, [illegible] Pune
5) **Prof. Dr. Chandrakant Chavhan**, Chairman BOS, [illegible] Nagpur
6) **Prof. Dr. Rashmi Band**, Chairman BOS, [illegible]
7) **Prof. Dr. Anil Shingare**, Aurangabad
8) **Prof. Dr. B. R. Maske**, Nagpur
9) **Prof. Dr. Arvind Dhoke**, [illegible]
10) **Prof. Dr. Praful Rajurwade**, [illegible]
11) **Prof. Dr. Kundan Sahare**, [illegible]
12) **Prof. Dr. Sanjay Patil**, Dhule
13) **Prof. Dr. Dilip Telang**, Mumbai
14) **Prof. Dr. Sudhakar Lahupachang**, [illegible]
15) **Prof. Dr. Jagdish Sonowane**, [illegible]

Our Guests, Resource Persons and Eminent Experts

Patron
Shri Harshwardhanji Deshmukh

Patron
Shri Dolendraji Patil

Inaugurator
Dr. Murlidhar Wadekar

Key Note Address
Dr. Purushottam Palawadhankar
[illegible] Thailand

Chief Guest
Dr. Prashant Rokade

Speaker
Dr. Sandesh Wagh

Chairperson
Dr. Sushim Pagare

Guest of Honour
Dr. Indira P. Suryavanshi
Associate Professor
[illegible] Hyderabad
Telangana State

10) **Prof. Dr. Uttam Sawant**, Nanded
11) **Prof. Dr. Baban Pawar**, [illegible]
12) **Prof. Dr. Sanjay Gaikwad**, [illegible]
13) **Prof. Dr. Aruna Waghode**, Pune
14) **Prof. Dr. Vasudeo Dongardive**, [illegible]

University B.O.S. Member

1) **Prof. Dr. Vipin Rathod**, B.O.S. Member
2) **Prof. Dr. Nitin Sarat**, B.O.S. Member, Amravati
3) **Prof. Dr. Kailas Gaikwad**, [illegible] B.O.S. Member
4) **Prof. Dr. Narayansing Varma**, [illegible] B.O.S. Member
5) **Prof. Dr. S. S. Bicchewar**, [illegible] B.O.S. Member
6) **Prof. Dr. Pramod Chavan**, Khamgaon, B.O.S. Member
7) **Prof. Dr. Omraj Gajbhiye**, [illegible] B.O.S. Member

1) **Prof. Dr. Vasant Dongre**, [illegible]
2) **Prof. Dr. Kishor Surse**, [illegible]
3) **Prof. Dr. Kavita Tated**, [illegible]
4) **Prof. Dr. Bhaskar Wazire**, Akola
5) **Prof. Dr. N. L. Wankhade**, Akola
6) **Prof. Dr. Chandrakant Sardar**, [illegible]
7) **Prof. Dr. Vasant Padghan**, Akola
8) **Prof. Dr. Minal Kherade**, Amravati
9) **Prof. Dr. Rekha Badodekar**, [illegible]
10) **Prof. Dr. Pradip Dhole**, [illegible]
11) **Prof. Dr. Yuvraj Mahure**, [illegible]

ORGANIZERS

Dr. Gopal Vairale, Principal
Narayanrao Rana Maha. [illegible]

Dr. Gopal Dhole, Principal
Dr. Gopalrao Khedkar Mahavidyalaya [illegible]

Dr. Santosh Bansod
[illegible]

Dr. Dhiraj Najan
[illegible]

Aadhar PUBLICATIONS

For Details www.aadharsocial.com

New Hanuman Nagar, In Front Of Pathyapustak Mandal, Behind V.M.V. College, Amravati (M.S.) India Pin- 444604

Mob-- 9595560278, Emial: aadharpublications@gmail.com

Price:Rs.500/

issn

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd. 1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani